गुरुकृपा का दिव्य प्रकाश :

मकर संक्रान्ति के सम्मान में वीडिओ

ज्ञानेश्वरी

१६वें अध्याय में से उद्धरण [ओवियाँ]

मावळवीत विश्वाभासु। नवल उदयला चंडाशु॥
अद्वयाब्जिनीविकाशु। वंदू आतां॥

श्रीगुरुरूपी तेजोमय सूर्य को वन्दन,
जिनके उदय होने से विश्व का आभास नष्ट हो गया है
और इसके फलस्वरूप अद्वैतरूपी कमल की पंखुडियाँ खुल गई हैं!

जो अविद्याराती रुसोनियां। गिळी ज्ञानाज्ञान चांदणियां॥
जो सुदिनु करी ज्ञानियां। स्वबोधाचा॥

वे अविद्यारूपी रात्रि को निगल जाते हैं,
ज्ञान-अज्ञान के भ्रम को दूर करते हैं
और ज्ञानीजनों के लिए आत्मज्ञान के शुभदिन का उदय कराते हैं।

जेणें विवळतिये सबळे। लाहोनि आत्मज्ञानाचे डोळे॥
सांडिती देहाहंतेचीं अविसाळें। जीवपक्षी॥

प्रभात होने पर, आत्मज्ञानरूपी चक्षु खुल जाते हैं
और जीवात्मारूपी पक्षी
अपने देहभावरूपी घोसलों को छोड़ देते हैं।

लिंगदेहकमळांचा। पोटीं वेंचतयां चिद्भ्रमराचा॥
बंदिमोक्षु जयाचा। उदैला होय॥

उनका उदय होते ही सूक्ष्म शरीररूपी कमल में बन्द,
चेतनारूपी भ्रमर मुक्ति पा लेता है।

शब्दाचिया आसकडीं। भेदनदीचां दोहीं थडीं॥
आरडाते विरहवेडीं। बुद्धिबोधु॥

शास्त्रों के परस्पर विरोधी उपदेशों के कारण
उत्पन्न होने वाली द्वैतरूपी नदी के आमने-सामने के तटों पर,
बुद्धि और बोध उसी प्रकार क्रन्दन करने लगते हैं
जैसे विरह की पीड़ा से ग्रस्त चक्रवाक पक्षियों का जोड़ा क्रन्दन कर उठता है।

तया चक्रवाकांचें मिथुन। सामरस्याचें समाधान॥
भोगवी जो चिद्गगन। भुवनदिवा॥

चिदाकाश में स्थित, जगत का यह प्रकाश उन्हें [बुद्धि और बोध को]
समरसता का समाधान प्रदान करता है।

जेणें पाहालिये पाहांटे। भेदाची चोरळी फिटे॥
रिघती आत्मानुभववाटे। पांथिक योगी॥

इस सूर्य के उदित होते ही चोररूपी काली रात बीत जाती है
और यात्रा करने वाले पथिक-योगीजन
आध्यात्मिक अनुभूति के मार्ग पर निकल पड़ते हैं।

तेव्हां विश्वस्वप्नासहितें। कोण अन्यथामतिनिद्रेतें॥
सांभाळी नुरेचि जेथें। मायाराती॥

माया की रात्रि समाप्त हो जाने पर,
अनुचित समझरूपी निद्रा को
और उसके विश्वाभासरूपी स्वप्न को कौन याद करेगा?

म्हणौनि अद्वयबोधपाटणीं। तेथ महानंदाची दाटणी॥
मग सुखानुभूतीचीं घेणीं देणीं। मंदावों लागती॥

एकात्मबोधरूपी नगर के बाज़ार में
आनन्द का अतिरेक हो जाता है;
और फिर वहाँ सांसारिक सुखों के लेन-देन की मन्दी आ जाती है।

किंबहुना ऐसैसें। मुक्तकैवल्य सुदिवसें॥
सदा लाहिजे कां प्रकाशें। जयाचेनि॥

उनकी [श्रीगुरु की] महिमा
मुक्त-आत्मा के कैवल्य [परमानन्द] की अनुभूति को
शाश्वत प्रकाश प्रदान करती है।

ज्ञानेश्वरी, अध्याय १६.१-७, ११-१३; स्वामी कृपानन्द द्वारा सम्पादित, *Jnaneshwar's Gita: A Rendering of the Jnaneshwari* [ऑल्बनी, न्यूयॉर्क : SUNY, १९८९] पृ. २५६। © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।